CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय
श्री राधा रमणो जयति
भरतमौध, करौंदा
वाराणसी-5

श्री गुरु महिमा

व्यासदेव
जगद्गुरु श्री चैतन्य सम्प्रदायाचार्य
श्री पुरुषोत्तम गोस्वामी जी महाराज
श्री धाम वृन्दावन

सत्संग सभा लालबर्रा
जिला - बालाघाट (म.प्र.)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्री श्री राधारमण देवजी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्री राधारमणो जयति
जयगौर

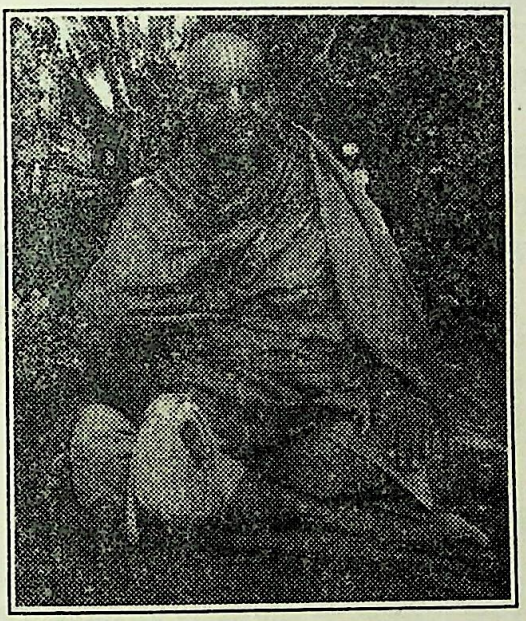

अनन्त श्री विभूषित ॐ विष्णुपाद श्री गुरुदेव,
जगद्गुरु - श्री चैतन्य सम्प्रदायाचार्य
श्री पुरुषोत्तम गोस्वामीजी महाराज के
आशीर्वाद से 'श्री गुरु महिमा'
का महाप्रसाद

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

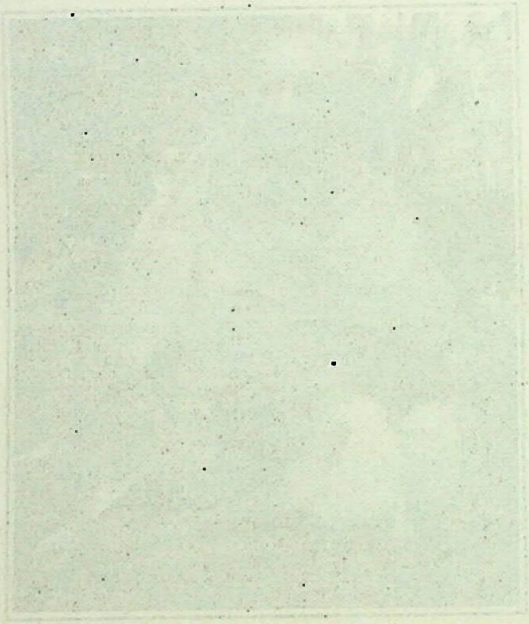

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"श्री राधारमणो जयति"

"जय गौर"

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

१) पूजयिष्यंस्ततः कृष्णमादौ सन्निहितं गुरुम्।
प्रणम्य पूजयेद्भक्त्या दत्वा किञ्चिदुपायनम्॥

अनन्तर श्रीकृष्ण पूजा के निमित्त उपस्थित होकर सर्वप्रथम समीपवर्ती श्रीगुरुदेव की पूजा दैनिक भिक्षा निकालकर नमस्कार एवं भक्ति के सहित उनकी पूजा करे।

२) रिक्तपाणि र्न पश्येत राजानं भिषजं गुरुम्।
नोपायनकरः पुत्रं शिष्यं भृत्यं निरीक्षयेत्॥

राजा, गुरु, चिकित्सक का दर्शन खाली हाथ से न करें अर्थात् कुछ भेंट देकर करें, तथा पुत्र, शिष्य, सेवक का साक्षात्कार भेंट देकर न करें।

३) प्रथमन्तु गुरुं पूज्य ततश्चैव ममार्चनम्।
कुर्व्वन सिद्धिमवाप्नोति ह्यन्यथा निष्फलं भवेत्॥

श्री भगवान कहते हैं कि सर्वप्रथम श्री गुरुदेव की पूजा करने के पश्चात मेरी पूजा करने से सिध्दि मिलती है, अन्यथा पूजा निष्फल होती है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

४) गुरौ सन्निहिते यस्तु पूजयेदन्यमग्रतः।
स दुर्गतिं मवाप्नोति पूजनं तस्य निष्फलम्॥

श्री नारदजी कहते हैं कि समीप में श्रीगुरुदेव विद्यमान होने पर जो व्यक्ति अन्य व्यक्ति की पूजा करता है, उसकी दुर्गति होती है। उसकी पूजा भी फलवती नहीं होती है।

५) यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥

भगवान के प्रति जिसकी पराभक्ति है, और उसी प्रकार से गुरुदेव में भी यदि वैसी ही भक्ति है तो वही व्यक्ति केवल शास्त्र के रहस्य को जान सकता है अन्यथा नहीं।

६) आचार्यं मां विजानीयान्नावमन्येत् कर्हिचित्।
न मर्त्यबुध्दयासूयेत सर्वदेवमयो गुरुः॥

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि मुझको ही गुरु जानें, गुरु का अपमान, अवज्ञा, अनादर कभी न करें। गुरु को मनुष्य बुध्दि करके असूया दोषारोपण न करें कारण श्री गुरुदेव सर्व देवमय होते हैं।

७) नाहमिज्याप्रजातिभ्यां तपसोपशमेन च।
तुष्येयं सर्वभूतात्मा गुरु-शुश्रूषया यथा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

भगवान श्रीकृष्ण अपने सखा सुदामा से कहते है - मैं सर्वभूतात्मा भगवान हूँ, श्री गुरु की सेवा के द्वारा मैं जिस प्रकार संतुष्ट होता हूँ गार्हस्थ्य धर्म, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं सन्यासी के धर्माचरण से उस प्रकार संतुष्ट नहीं होता हूँ।

८) यस्य साक्षाद्भगवति ज्ञानदीप प्रदे गुरौ।
मर्त्यासध्दीः श्रूतं तस्य सर्व कुञ्जरशौचवत्॥

देवर्षि नारद कहते हैं - ज्ञान का दीपक जलाने वाले श्री गुरुदेव साक्षात् भगवान ही हैं। उन श्री गुरुदेव में जो दुबुध्दि पुरुष मनुष्य बुध्दि करता है, उस व्यक्ति का समस्त शास्त्र श्रवण हाथी के स्नान के समान व्यर्थ होता हैं।

९) साधकस्य गुरौ भक्ति मन्दीकुर्वन्ति देवताः।
यन्नोऽतीत्य व्रजेद्विष्णुं शिष्यो भक्तया गुरौ ध्रुवम्॥

स्वर्ग के देवता कहते हैं - शिष्य गुरु चरणों में निश्चला भक्ति करके हम सबको लंघन कर अर्थात् स्वर्ग को लांघकर श्री विष्णु को प्राप्त कर लेगा इसलिए देवगण गुरुदेव के प्रति शिष्य की भक्ति को मंदीभूत कर देते हैं।

१०) गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुदेव परं ब्रह्म तस्मात् संपूजयेत् सदा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

गुरुदेव ही ब्रह्मा गुरुदेव ही शिव, गुरुदेव ही परम् ब्रह्म हैं। इसलिए श्री गुरुदेव की पूजा सर्वदा सम्यक् रुप से करें।

११) तस्मात सर्वप्रयत्नेन यथाविधि तथा गुरुम्।
अभेदेनार्चयेद् यस्तु स मुक्तिफलमाप्नुयात्॥

अतएव जिस प्रकार शास्त्र का विधान है, उसके अनुसार जो व्यक्ति सर्वथा यत्न पूर्वक श्री गुरुदेव को हरि से अभिन्न जानकर पूजा करते हैं, वे मुक्ति फल को प्राप्त कर लेते हैं।

१२) गुरुशुश्रूषणं नाम सर्वधर्मोत्तमोत्तमम्।
तस्माद्धर्मात् परो धर्मः पवित्रं नैव विद्यते॥

श्री गुरुसेवा ही सर्वापेक्षा उत्तम धर्म है, उक्त धर्म से उत्तम अथवा पवित्र दूसरा कोई धर्म नहीं हैं।

१३) कामक्रोधादिकं यद्यदात्मनोऽनिष्टकारणम्।
एतत् सर्वं गुरौ भक्त्या पुरुषो ह्यञ्जसा जयेत्॥

श्री गुरुदेव में भक्ति करने से मानव, आत्मा के अनिष्ट कारक काम, क्रोधादि जो रिपु हैं, उन सब पर विजय प्राप्त कर लेता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१४) भक्तिर्यथा हरौ मेऽस्ति तद्वन्निष्ठा गुरौ यदि।
ममास्ति तेन सत्येन स्वं दर्शयतु मे हरिः ॥

देवहूती महारानी कहती हैं - जिस प्रकार मेरी भक्ति श्री हरि के प्रति है, उस प्रकार निष्ठा भक्ति यदि श्री गुरुदेव के प्रति मैंने की हो तो इस सत्य के द्वारा श्री हरि मुझको दर्शन प्रदान करें।

१५) हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टेन कश्चन।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गुरुमेव प्रसादयेत् ॥

श्री हरि के रुष्ट होने से श्री गुरुदेव उसके रक्षक हो जाते हैं, किन्तु गुरु के रुष्ट होने से श्री हरि भी उसकी रक्षा नहीं कर सकते हैं। अतः सर्वथा यत्न पूर्वक श्री गुरुदेव को प्रसन्न करें।

१६) अपि प्रहन्तः शपन्तो वा विरुद्धा अपि ये क्रुधा।
गुरवः पूजनीयास्ते गृहं नत्वा नयेत तान् ॥

श्री गुरुदेव प्रहार करें, अथवा शाप प्रदान करें, अथवा विरोध करें, अथवा रुष्ट हो जायें, जो गुरुजन हैं, सर्वथा उनकी पूजा ही करनी चाहिए, एवं प्रणाम पूर्वक उनको अपने घर में ले आना चाहिए।

१७) तत् श्लाघ्यं जन्म धन्यं तत् दिनं पुण्याथ नाड़िका।
यस्यां गुरुं प्रणमते समुपास्य तु भक्तितः॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eCangotri

जिस घड़ी मुहुर्त में श्री गुरुदेव को प्रणाम किया जाता है, वही जन्म धन्य है, वही दिन धन्य है, वही घड़ी मुहुर्त पवित्र है।

१८) बोधः कलुषितस्तेन दौरात्म्यं प्रकटीकृतम्।
गुरुर्येन परित्यक्तस्तेन व्यक्तः पुरा हरिः॥

जो व्यक्ति श्री गुरुदेव का परित्याग करता है उससे श्री हरि पहले से ही परित्यक्त हो जाते हैं, इस आचरण के द्वारा उसका ज्ञान कलुषित हुआ, एवं दौरात्म भी प्रकट हुआ।

१९) अवैष्णवोपदिष्टेन मन्त्रेण निरयं व्रजेत्।
पुनश्च विधिना सम्यगग्राहये द्वैष्णवाद्गुरोः॥

अवैष्णव गुरु से मन्त्र ग्रहण करने से नरक की प्राप्ति होती है। नरक की प्राप्ति न हो इस कारण यथाविधि सम्यक् रुप से वैष्णव गुरु के शरणागत होकर गुरु से मन्त्र दीक्षा ग्रहण करें।

२०) ये गुव्वाज्ञां न कुर्वन्ति पापिष्ठाः पुरुषाधमाः।
न तेषां नरक क्लेशनिस्तारो मुनिसत्तम॥

जो सब पापिष्ठ नराधम, गुरु की आज्ञा का उलंघन करते हैं, उनका नरक यत्रणा से कभी भी उध्दार नहीं हो सकता है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१) यैः शिष्यैः शश्वदाराध्या गुरवोहावमानिताः ।
पुत्रमित्रकलत्रादिसम्पद्भ्रयः प्रच्युता हि ते ॥

सर्वदा आराध्य गुरुवर्ग की जो कोई भी अवज्ञा, अनादर शिष्य करता है, तो निश्चय ही पुत्र, मित्र, स्त्री आदि संपत्ती समूह से भ्रष्ट हो जाता है।

२२) अधिक्षिप्य गुरुं मोहत् परुषं प्रवदन्ति ये ।
शूकरत्वं भवत्येष तेषां जन्मशतेष्वपि ॥

जो कोई भी शिष्य अज्ञानवशतः श्री गुरुदेव का तिरस्कार करके उनको सामान्य मनुष्य बुध्दि से देखता है, वह सौ जन्म पर्यन्त शूकर की देहा को प्राप्त करता है।

२३) ये गुरुद्रोहिणो मूढाः सततं पापकारिणः ।
तेषाञ्च यावत् सुकृतं दुष्कृतं स्थान्न संशयः ॥

सर्वपापाचरणकारी जो सब मूढ़ मनुष्य गुरु से द्रोह करते हैं, वे सब पुण्य से रहित हो जाते हैं, एवं उनके पुण्य समूह पाप में बदल जाते हैं, इसमें संदेह नहीं है।

२४) अतः प्राग्गुरुमभ्यर्च्य कृष्णभावेन बुध्दिमान् ।
त्र्यवरानसमान् कुर्य्यात् प्रणामान् दण्डपातवत् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizaqtion by eGangotri

अतएव सर्वप्रथम बुध्दिमान जन श्रीकृष्ण बुध्दि से ही श्री गुरुदेव का पूजन करें, एवं उनके चरणों में तीन बार या अधिक विषम प्रणाम करें।

२५) व्यत्यस्त पाणिना कार्य्यमुपसंग्रहणं गुरोः।
सव्येन सव्यः स्पष्टव्यो दक्षिणेन तु दक्षिणः॥

गुरुदेव को प्रणाम करते समय यह ध्यान रखें कि वाम हस्त से श्री गुरुदेव के वामचरण को और दक्षिण हस्त से श्री गुरुदेव के दक्षिण चरण को स्पर्श करें।

२६) एष वै भगवान्साक्षात् प्रधानपुरुषेश्वरः।
योगश्वरैर्विभृग्याङ्घ्रिर्लोको यं मन्यते नरम॥

बड़े-बड़े योगेश्वर जिनके चरण कमलों का अनुसंधान करते रहते हैं, प्रकृति और पुरुष के अधीश्वर वे स्वयं भगवान् ही गुरुदेव के रुप में प्रकट हैं। इन्हें लोग भ्रम से मनुष्य मानते हैं।

२७) एतदेव हि सच्छिष्यैः कर्तव्यं गुरुनिष्कृतम्।
यद् वै विशुध्दभावेन सर्वार्थात्मार्पणं गुरौ॥

भगवान श्रीकृष्ण सुदामा से कहते हैं - गुरु के ऋण से मुक्त होने के लिए सत्-शिष्यों का इतना

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ही कर्तव्य है कि वे विशुध्द भाव से अपना सब कुछ और शरीर भी गुरुदेव की सेवा में समर्पित कर दें।

२८) भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्या -
दीशादपेतस्य विपर्ययोऽस्मृतिः।
तन्मायया तो बुध आभजेत्तं
भक्त्यैकयेशं गुरुदेवतात्मा॥

ईश्वर से विमुख पुरुष को उनकी माया से अपने स्वरुप की विस्मृति से ही "मैं देखता हूँ, मैं मनुष्य हूँ," इस प्रकार का भ्रम-विपर्यय हो जाता हैं। इस देह आदि अन्य वस्तु में अभिनिवेश, तन्मयता होने के कारण ही बुढ़ापा मृत्यु, रोग आदि अनेकों भय होते हैं। इसलिए अपने गुरु को ही आराध्यदेव परम प्रियतम मानकर अनन्य भक्ति के द्वारा उस ईश्वर का भजन करना चाहिए।

२९) गुरोरनुग्रहेणैव पुमान् पूर्णः प्रशान्तये।

गुरुदेव की कृपा से ही मनुष्य शांति का अधिकारी होता और पूर्णता को प्राप्त करता है।

****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विजितद्वषीकवायुभिरदान्तमनस्तुरगं
य इह यतन्ति यन्तुमति लोलमुपायखिदः ।
व्यसनशतान्विताः समवहाय गुरोश्चरणं
वणिज इवाज सन्त्यकृतकर्णधरा जलधौ ॥

अजन्मा प्रभो ; जिन योगियो ने अपनी इन्द्रियों और प्राणों को वश में कर लिया है, वे भी जब गुरुदेव के चरणों की शरण न लेकर उच्छृख्डल एवं अत्यंत चञ्चल मन-तुरंग को अपने वश में करने का प्रयत्न करते हैं, तब अपने साधनों में सफल नहीं होते। उन्हें बार-बार खेद और सैकड़ों विपत्तीयों का सामना करना पड़ता है, केवल श्रम और दुःख ही उनके हाथ लगता है उनकी ठीक वही दशा होती है, जैसी समुद्र में बिना कर्णधार की नाव पर यात्रा वाले व्यापारीयों की होती है।

(तात्पर्य यह है कि जो मन को वश में करना चाहते हैं उनके लिए कर्णधार - गुरु की अनिवार्य आवश्यकता है।)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

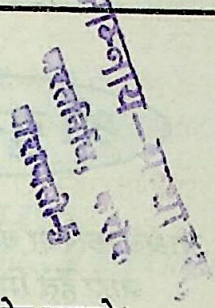

गुरु कृष्ण रुप होन, शास्त्रेर प्रमाने।
गुरु रुपे कृष्ण कृपा करेन भक्त जने॥

श्री चैतन्य चरितामृत में लिखा है कि शास्त्र प्रमाण से श्री गुरुदेव कृष्ण रुप ही हैं। श्री कृष्ण गुरुदेव के रुप में ही कृपा करते हैं।

जीवेर उध्दार लागि नंद सुत हरि।
भुवने प्रकाश हन गुरु रुप धरि॥

श्री सनातन गोस्वामीपाद कहते हैं कि जीवों के उध्दार के लिए नंदनंदन श्री कृष्ण ही गुरुरुप से प्रकट हुए हैं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्री गुरु चन्दना

आश्रय करिया बंदो श्री गुरु चरन।
जाहा हैंते मिले भाई कृष्ण प्रेमधन ॥१॥

जीवरे निस्तार लागी नन्द सुत हरि।
भुवने प्रकाश हन गुरु रुप धरि ॥२॥

महिमाय गुरु कृष्ण एक करि ज्ञान।
गुरु आज्ञा हदे सब सत्य करिमान ॥३॥

सत्य ज्ञाने गुरु-वाक्ये जाहार विश्वास।
अवश्य ताहार हय ब्रजभूमि वास ॥४॥

जार प्रति गुरुदेव हन परसन्न।
कोन विघ्ने सेह नाही हय अवसन्न ॥५॥

कृष्ण रुष्ट हले गुरु राखिवारे पारे।
गुरु रुष्ट हले कृष्ण राखिवारे नारे ॥६॥

गुरु माता गुरु पिता गुरु हन पति।
गुरु बिना ए संसारे नाहि आर गति ॥७॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु के मनुष्य ज्ञान ना कर करवन।
गुरु निन्दा कभू कर्णे ना कर श्रवण ॥८॥

गुरु निन्दकेर मुख कभु ना हेरिवे।
जाहां हय गुरु निन्दा तथा न जाइवे ॥९॥

गुरुर विक्रिया जदि देखह करवन।
तथापि अवज्ञा नाहि कर कदाचन ॥१०॥

गुरु पाद पद्मे रहे जार निष्ठा भक्ति।
ज़गत तारिते सेई धरे महाशक्ति ॥११॥

हेन गुरु पाद पदम करह वन्दना।
जाहा हैते घूंचे भाई सकल जन्त्रणा ॥१२॥

गुरु पाद पदम नित्य जे करे वन्दन।
शिरे धरि वन्दि आमि ताहार चरन ॥१३॥

श्री गुरु चरन पदम हृदे करि आश।
श्री गुरु वन्दना करे (श्री) सनातन दास ॥१४॥

****
****
*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(श्री गुरु वन्दना भावार्थ -)

श्री गुरुदेव का आश्रय करके श्री गुरुचरणारविन्द की वन्दना करता हूँ। जिस गुरु चरणारविन्द की वन्दना करने से कृष्ण प्रेमधन की प्राप्ति हो जाती है ॥१॥

जीवों के उध्दार के लिए नन्द सुतश्री हरि गुरु रुप से प्रकट हुए है ॥२॥

महिमायें गुरु और कृष्ण को एक समान ही मानना चाहिए। गुरु की आज्ञा को ही सत्य मानकर हृदय में धारण करना चाहिए ॥३॥

गुरु वचन ही परम सत्य है ऐसा जिसका विश्वास है, उसको अवश्य ही ब्रजभूमि का वास मिल जाता है ॥४॥

जिसके उपर श्री गुरुदेव प्रसन्न हो जाते हैं वह किसी भी विघ्न के आने पर दु:खी नहीं होता है ॥५॥

कृष्ण यदि रुष्ट हो जाते हैं तो गुरु कृपा से श्री कृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं किन्तु गुरु के रुष्ट हो जाने से कृष्ण उसकी किसी प्रकार भी रक्षा नहीं करते हैं ॥६॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुरु ही माता है गुरु ही पिता है गुरु ही पति है । गुरु के बिना इस संसार में और कोई भी गति नहीं है ॥७॥

गुरु में कभी भी मनुष्य बुध्दि नहीं करनी चाहिए। गुरुदेव की निन्दा को कभी भी कानों से नहीं सुनना ॥८॥

गुरुदेव की निन्दा करने वाले का मुख कभी नहीं देखना जहाँ गुरु निन्दा होती हो वहाँ कभी नहीं जाना ॥९॥

गुरु की क्रिया में यदि कभी भी व्यक्तिक्रम देखने को मिले तो भी गुरुदेव की कभी भी अवज्ञा नहीं करना ॥१०॥

गुरुदेव के चरणारविन्द में जिसकी निष्ठा पूर्ण भक्ति विद्यमान रहती है । उसे भवसागर तरने की महाशक्ति की प्राप्ति हो जाती है ॥११॥

ऐसे श्री गुरुदेव के पाद पद्म की वन्दना करो जिस पाद पद्म की वन्दना करने से संसार की समस्त यन्त्रणा दूर हो जाती है ॥१२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्री गुरुदेव के पाद पद्म की जो नित्य वन्दना करते हैं (श्री सनातन दासजी कहते हैं) मैं उनके चरणों में मस्तक रखके उनके चरणों की वन्दना करता हूँ॥१३॥

श्री गुरु चरण कमल को हृदय में धारण करने की आशा से श्री सनातन दास गुरु वन्दना करते हैं ॥१४॥

++++++++

राम तजू पै गुरु न बिसाऊँ।
गुरु के सम हरि को नही जानूँ॥

हरि ने जनम दियो जग माँही,
गुरु ने आवागमन मिटाही॥

हरि ने कुटुंब जाल में घेरी,
गुरु ने काटी ममता बेरी॥

हरि ने रोग भोग उरझायो,
गुरु ज्ञानी करि सबै छुड़ायो॥

हरि ने म्हाँसू आप छिपायो,
गुरु दीपक ले ताहि दिखायो॥

हरि ने करम भरम भरमायो,
गुरु ने आतम रुप लखायो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

फिर हरि बंध मुक्ति गति लाये,
गुरु ने सबही भरम मिटाये ॥

गुरु चरणन पै सरबस वारुँ,
गुरु न तजूँ पै हरि तजि डारुँ ॥

मोहे लागि लगन गुरु चरणन की।
गुरु चरणन की, गुरु चरणन की ॥

चरण बिना मोहे कछु नहि भावे।
जग माया सब सपनन की ॥

भवसागर सब सूख गयो है,
फिकर नहीं मोहे तरनन की ॥

'मीरा' के प्रभु गिरधर नागर।
आस गही गुरु चरणन की ॥

****
****
*****

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

।। श्री राधा स्तवन ।।

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे की दास।
जनम-जनम मोहे दीजियो, युगल चरण में वास ।। १ ।।

राधे मेरी स्वामिनी, मैं राधे की दास।
जनम-जनम मोहे दीजियो, श्री वृन्दावन वास ।। २ ।।

सब द्वारन कौं छाँड़िके, आई तिहारे द्वार।
अहो भानु की लाड़िली, टुक मेरी ओर निहार ।। ३ ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi